राजस्थान में दलित आन्दोलन का इतिहास
(सन् 2000 से 2022 तक)

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"
Estd. 2008

शोध-प्रस्ताव

2022- 23

विभाग का नाम – इतिहास

शोध निर्देशक
डॉ. ललित पांडे
प्रोफेसर

शोधार्थी
नंदराम मेघवाल
Enrol. No.- JVR-I/22/10056

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,

जयपुर, राजस्थान (भारत)

शोध प्रस्ताव

क्र सं.	अध्याय विन्यास	पेज सं.
01.	अध्ययन का शीर्षक	
02.	प्रस्तावना	
03.	साहित्य की समीक्षा	
04.	परिकल्पना	
05.	शोध का उद्देश्य	
06.	अध्यायीकरण	
07.	शोध प्रविधि	
08.	आंकडों का संग्रहण एवं विश्लेषण	
09.	परिणाम	
10.	निष्कर्ष	
11.	संदर्भ सूची	

अध्ययन का शीर्षक –

राजस्थान में दलित आन्दोलन का इतिहास (सन् 2000 से 2022 तक)

प्रस्तावना –

राजस्थान में दलित आन्दोलन में दलितों की प्रस्थिति में सामाजिक राजनीतिक परिर्वतन लाने के लिए एक विरोध आंदोलन के रूप में शुरू हुआ। राजस्थान में दलित आन्दोलन की गतिविधि ड़ॉ अम्बेडकर आन्दोलन के प्रभाव से 1930 के दशक से मानी जाती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात की शिक्षित पीढ़ी, उर्ध्वगामी गतिशील, सामाजिक रूप से जागरुक एवं राजनीतिक दृष्टि से सचेतन ने दलितों के साथ किए अन्य समुदायों के अत्याचारों का प्रमुखता से विरोध शुरू हुआ। दलित आन्दोलन की महत्वपूर्ण गतिविधि 1930 के दशक से अम्बेडकर आंदोलन की उत्पत्ति मानी जाती है। अम्बेडकर आंदोलन के सामाजिक-राजनीतिक इतिहास और बौद्ध धर्म में धर्मान्तरण ने राजस्थान के दलित समुदायों पर सकारात्मक प्रभाव छोड़ा, जिससे दलित समाज के शिक्षित वर्ग ने अत्याचार के खिलाफ मुहिम चला दी।

डॉ अम्बेडकर के भाषणों और आंदोलन के प्रभाव तथा हिन्दु धर्म के अनुष्ठानों व चुनौतियों ने दलित वर्ग पर जागरूक करने महत्वपूर्ण योगदान दिया। राजस्थान के दलित समुदायों में आज दिख रही महत्वपूर्ण उपलब्धियों ने डॉ अम्बेडकर के संघर्षो और आंदोलन दलित समाज की युवा पीढी को सचेत किया और समाज में जय भीम के नारे के साथ दलित आन्दोलन ने गति पकड़ी।

आजदी के पश्चात् राज्य, जिला एवं क्षेत्रीय स्तर पर दलितों के उथान हेतु अनेक संगठनों का निर्माण हुआ। राजस्थान में राजस्थान प्रांतीय रैगर महासभा, राजस्थान मेघवंश महासभा, जाटव महासभा, राजपूताना मेहत्तर सुधार सभा, आदि दलित आन्दोलन के आगे आए, और दलितोद्धार हेतु प्रयास किये। दलित संगठनों का स्थापना समाज सुधारक ज्योतिबा फूले के समय की शुरू हो गई थी। आजादी से पहले ही राजस्थान पर तुर्कों और मुगलों के आक्रमण से सामाजिक एवं धार्मिक जीवन में कई परिस्थितियाँ पैदा हुई और समय की आवश्यकताओं ने दलितोद्धार आंदोलन को जन्म दिया।

अतीत की बात करें तो 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में राजाओं और सामंतों के रहन-सहन, खान-पान तथा पहनावे - ओढावे में परिवर्तन आने लगा था। युद्धों का खतरा समाप्त हो गया था। राजाओं के राज्य और सामंतों की जागीर सुरक्षित हो गयी थी। राजकुमार और सामंत पुत्र पाश्चात्य जीवन शैली से

प्रभावित थे। पश्चिमी शैली के अनुसार खान-पान, वेशभूषा, रहन-सहन अपनाया जाने लगा। पश्चिमी शैली से ही महल और हवेलियाँ बनवाई जाने लगीं। नयी जीवन पद्धति से आवश्यकताएँ बढ़ी और आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए वे जनता का शोषण करने लगे, जिसकी सबसे ज्यादा मार दलितों पर पड़ी। उन्हें सभी प्रकार के अधिकारों से तो पहले से ही वंचित किया गया था, अब उनसे बेगार भी ली जाने लगी। इसी सदी में दलित वर्ग में कुछ संतों जैसे महर्षि नवल, बालीनाथ, आत्माराम लक्ष्य, गोकुलदास, परमानंद भारती, जोगाराम आदि का प्रादुर्भाव हुआ, जिन्होंने दलित वर्ग को एक नई दिशा प्रदान की।

अंग्रेजों ने राजस्थान में ब्रिटिश नियमों पर आधारित प्रशासनिक और न्यायिक संस्थाएँ स्थापित की, जिससे जातीय पंचायतों का महत्व घट गया। सभी प्रकार की जातीय सुविधाओं और पंचायतों को समाप्त करके एक समान विधिवत् शासन लागू किया गया। जिससे पुरातन सांस्कृतिक व्यवस्था टूटने लगी और नई व्यवस्था स्थापित होने लगी।

पाश्चात्य शिक्षा और संस्कृति का प्रभाव राजस्थान के दलितों पर भी पड़ा। राजस्थान के सामाजिक जीवन में छुआछूत जैसी कुप्रथा के विरूद्ध सामाजिक क्रांति उत्पन्न हुई। पश्चिमी लोग जाति-पाँति में विश्वास नहीं करते थे। वे केवल व्यक्ति की स्वतंत्रता को महत्व देते थे। अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार तथा ब्रिटिश शासकों के सम्पर्क में आने से लोगों में सुधारवादी दृष्टिकोण का विकास हुआ। महात्मा फूले ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''गुलामगीरी'' में दलितों की पीड़ा का उल्लेख किया है। भारत के दलितोद्धार आंदोलन के सबसे बड़े महानायक डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर हैं। उन्नीसवीं सदी के भारत में राष्ट्रीय चेतना और पश्चिमी उदारवादी विचारों के परिणामस्वरूप आंदोलन प्रारम्भ हुए। इन आंदोलनों ने धीरे-धीरे सामाजिक विषमता और धर्म सुधार का मार्ग प्रशस्त किया। राजस्थान की सामाजिक व्यवस्था भी भारतीय सामाजिक व्यवस्था की भाँति जातिप्रथा, अस्पृश्यता, दलित शोषण एवं अत्याचार पर आधारित थी। राज्य की समस्त भूमि पर सामन्तों का स्वामित्व माना जाता था। ये दलित वर्ग के हितों पर कोई ध्यान नहीं देते थे। शासक एवं सामंतों तक जिन लोगों की पहुँच थी, उनके द्वारा दलित वर्ग का शोषण किया जाता था। आज भी राजस्थान के विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में इन्हें अस्पृश्यता एवं शोषण का शिकार होना पड़ता है।

साहित्य की समीक्षा

भारतीय दलित आंदोलन का इतिहास (खंड 1-4) मोहनदास नैमिशराय, प्रकाशक- राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रकाशित वर्ष : 2013 इस पुस्तक में दलित आन्दोलन में अग्रणी व्यक्तित्वों, सामाजिक कार्यकर्ताओं व संस्थाओं का वर्णन किया गया है।

दलित साहित्य के इतिहास लेखन की समस्याएँ- डॉ. राम नरेश राम, शोध आलेख, दिसंबर 31, 20220, शोध सार : इस शोध पत्र में दलित साहित्य के इतिहास लेखन की समस्याओं पर विचार किया गया है। यह शोध पत्र दलित साहित्य की परंपरा को सिर्फ़ आधुनिक काल के लिखित साहित्य में ही नहीं देखता बल्कि मध्यकाल की संत परंपरा में इसके बीज को देखने की प्रस्तावना करता है।

दलित नेतृत्व का संकट, प्रोफ़ेसर श्याम 'क्राइसिस ऑफ दलित लीडरशिप' आई है, जो संभवत: अंग्रेजी में भी इस विषय की पहली किताब है। राजस्थान के इस एक उदाहरण से लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि दलित नेतृत्व का संकट वस्तुत: इस कारण नहीं है कि दलित नेता अयोग्य हैं या दलितों के प्रति उदासीन हैं, बल्कि सच यह है कि हिंदू नेता अपने पूर्वाग्रहों से उनकी उपेक्षा करते हैं और उन्हें अयोग्य दिखाने का षड्यंत्र रचते हैं।

दलित आंदोलन अधीनस्थों के आंदोलन की समीक्षा- अजय कुमार, भारतीय समाजशास्त्र समीक्षा 5(1) 1–44 © 2018 Indian इस पुस्तक में दलित आंदोलन अधीनस्थों के आंदोलन की समीक्षा की गई है। इतिहास में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों में परिवर्तन कुछ विशिष्ट आदर्शों एवं दृष्टियों की शक्ति द्वारा हुआ है। इसी प्रकार का आश्चर्यजनक परिवर्तन परम्परागत भारत में प्रगति पर है और जातिगत सम्बन्धों से जुड़े पुराने मूल्य अत्यधिक तनाव में हैं। इसी प्रकार का एक महान परिवर्तन आधुनिक भारतीय समाज में हमारे समय का दलित रुपान्तरण है।

अध्यायीकरण

अध्याय प्रथम - दलित एवं दलित आन्दोलन की अवधारणाएं

अध्याय द्वितीय –स्वतंत्रता पूर्व राजस्थान में दलित आन्दोलन

1. दलित आन्दोलन में महात्मा गांधी का योगदान
2. दलित आन्दोलन में डॉ अम्बेडकर का योगदान

अध्याय तृतीय –स्वतंत्रता के बाद राजस्थान में दलित आन्दोलन

1. डॉ अम्बेडकर और बुद्धवादी दलित आन्दोलन
2. चुनावी राजनीति में दलित और दलित संगठन

अध्याय चतुर्थ - राजस्थान में सामाजिक–आर्थिक दलित आन्दोलन

अध्याय पंचम –राजस्थान में राजनीतिक- धार्मिक दलित आन्दोलन

अध्याय षष्ट - राजस्थान में दलित की समस्याएं, मुद्दों और दलित आन्दोलन के कारण

शोध का उद्देश्य

1. राजस्थान में दलित आन्दोलन में सम्मिलित समस्यायों और मुद्दों का अध्ययन।
2. चुनावी राजनीति में दलितों और उनके संगठन की भूमिका का अध्ययन।
3. राजस्थान में दलित आन्दोलनों के कारण और अन्य समुदायों पर प्रभाव का अध्ययन।
4. राजस्थान में दलित आन्दोलन से सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तनों का अध्ययन
5. राजस्थान में दलित और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण की व्यापकता का अध्ययन
6. राजस्थान में दलित उत्पीड़न की घटनाओं की पुनरावृति का अध्ययन।

शोध प्रविधि –

शोध कार्य के लिए शोधार्थी राजस्थान में दलित आन्दोलन से संबन्धित संगठनों व संस्थाओं से जुड़े विशिष्ट व्यक्तियों से विचार विमर्श करेगा। उक्त संगठनों व संस्थाओं के कार्यो, योजनाओं के अलावा दलित आन्दोलन से जूड़े क्षेत्र के लोगों, दलित समाज के विचारक और राजनीति प्रभाव रखने वाले लोगों से साक्षात्कार करेगा।

राजस्थान में दलित अधिकारों संबन्धित सरकारी अधिसूचनाओ, न्यायालयों द्वारा अधिसूचनाओं का वर्णन। और राजस्थान में दलित समाज द्वारा किए गए आन्दोलनों की तथ्यों की पुष्टि और समस्यों के अध्ययन के लिए ऐतिहासिक विधि द्वारा अध्ययन किया जाएगा। सरकारी, अर्धसरकारी एवं सामाजिक संस्थाओं द्वारा किए गए वे कौन-कौन से कार्य थे। जिससे दलित समाज के विकास की संभावनाएं बढी। इस प्रकार से राजस्थान में दलित आन्दोलन का इतिहास के विषय पर अध्ययन के लिए शोधार्थी शोध का कार्य करेगा।

संदर्भ

1. एम. एस. राव – ‘भारत के सामाजिक आंदोलन’

2. बी. टी. रणदिवे – ‘जाति क्यों नहीं जाती ?’

3. पुरणमल – ‘अस्पृश्यता एवं दलित चेतना’

4. चैड़वाल, शिवचरण – राजस्थान में दलित चेतना का उदय एवं विकास,

5. डॉ. बी. आर. अम्बेडकर, ‘अछूत कौन और कैसे?’

6. कंवल भारती – ‘दलित विमर्श की भूमिका’, इतिहास बोध प्रकाशन, इलाहाबाद

7. https://egyankosh.ac.in/bitstream/123456789/69748/1/Unit-9.pdf

8.http://www.socialresearchfoundation.com/upoadreserchpapers/5/215/1808110618071st%20siya%20ram%20meena.pdf

9. https://www.satyahindi.com/literature/rang-kitne-sang-mere-book-review-113436.html

10. https://www.apnimaati.com/2022/12/blog-post_84.html